Shri Lakshmi Chalisa Lyrics

Shri Lakshmi Chalisa Lyrics in Hindi

॥ दोहा ॥
मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास ।
मनोकामना सिद्घ करि, परुवहु मेरी आस ॥

यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करुं ।
सब विधि करौ सुवास, जय जननि जगदंबिका ॥

॥ चौपाई ॥
सिन्धु सुता मैं सुमिरौ तोही । ज्ञान बुद्घि विघा दो मोही ॥

तुम समान नहिं कोई उपकारी । सब विधि पुरवहु आस हमारी ॥

जय जय जगत जननि जगदम्बा । सबकी तुम ही हो अवलम्बा ॥

तुम ही हो सब घट घट वासी । विनती यही हमारी खासी ॥

जगजननी जय सिन्धु कुमारी । दीनन की तुम हो हितकारी ॥

विनवौं नित्य तुमहिं महारानी । कृपा करौ जग जननि भवानी ॥

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी । सुधि लीजै अपराध बिसारी ॥

कृपा दृष्टि चितववो मम ओरी । जगजननी विनती सुन मोरी ॥

ज्ञान बुद्घि जय सुख की दाता । संकट हरो हमारी माता ॥

क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायो । चौदह रत्न सिन्धु में पायो ॥

चौदह रत्न में तुम सुखरासी । सेवा कियो प्रभु बनि दासी ॥

जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा । रुप बदल तहं सेवा कीन्हा ॥

स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा । लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ॥

तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं । सेवा कियो हृदय पुलकाहीं ॥

अपनाया तोहि अन्तर्यामी । विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी ॥

तुम सम प्रबल शक्ति नहीं आनी । कहं लौ महिमा कहौं बखानी ॥

मन क्रम वचन करै सेवकाई । मन इच्छित वांछित फल पाई ॥

तजि छल कपट और चतुराई । पूजहिं विविध भांति मनलाई ॥

और हाल मैं कहौं बुझाई । जो यह पाठ करै मन लाई ॥

ताको कोई कष्ट नोई । मन इच्छित पावै फल सोई ॥

त्राहि त्राहि जय दु:ख निवारिणि । त्रिविध ताप भव बंधन हारिणी ॥

जो चालीसा पढ़ै पढ़ावै । ध्यान लगाकर सुनै सुनावै ॥

ताकौ कोई न रोग सतावै । पुत्र आदि धन सम्पत्ति पावै ॥

पुत्रहीन अरु संपति हीना । अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना ॥

विप्र बोलाय कै पाठ करावै । शंका दिल में कभी न लावै ॥

पाठ करावै दिन चालीसा । ता पर कृपा करैं गौरीसा ॥

सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै । कमी नहीं काहू की आवै ॥

बारह मास करै जो पूजा । तेहि सम धन्य और नहिं दूजा ॥

प्रतिदिन पाठ करै मन माही । उन सम कोइ जग में कहुं नाहीं ॥

बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई । लेय परीक्षा ध्यान लगाई ॥

करि विश्वास करै व्रत नेमा । होय सिद्घ उपजै उर प्रेमा ॥

जय जय जय लक्ष्मी भवानी । सब में व्यापित हो गुण खानी ॥

तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं । तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहिं ॥

मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै । संकट काटि भक्ति मोहि दीजै ॥

भूल चूक करि क्षमा हमारी । दर्शन दजै दशा निहारी ॥

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी । तुमहि अछत दु:ख सहते भारी ॥

नहिं मोहिं ज्ञान बुद्घि है तन में । सब जानत हो अपने मन में ॥

रुप चतुर्भुज करके धारण । कष्ट मोर अब करहु निवारण ॥

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई । ज्ञान बुद्घि मोहि नहिं अधिकाई ॥

॥ दोहा ॥
त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो वेगि सब त्रास ।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु को नाश ॥

रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर ।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर ॥

Shri Lakshmi Chalisa Lyrics in English and Hinglish

Doha
Maatu Lakshmi kari kripa, karo hriday mein vaas.
Manokamna siddh kari, paruvahu meri aas.

Yahi mor ardaas, haath jod vinati karun.
Sab vidhi karau suvaas, jai janani Jagadambika.

** Chaupaai **
Sindhu suta main sumiro tohi, gyaan buddhi vidha do mohi.
Tum samaan nahin koi upkaari, sab vidhi purvahu aas humaari.

Jai jai jagat janani Jagdamba, sabki tum hi ho avlamba.
Tum hi ho sab ghat ghat vaasi, vinati yahi humaari khaasi.

Jagjanani jai Sindhu kumaari, deenan ki tum ho hitkaari.
Vinavau nitya tumhin Maharani, kripa karau jag janani Bhavaani.

Kehi vidhi stuti karun tihaari, sudhi lijai apraadha bisaari.
Kripa drishti chitavvo mam ori, jagjanani vinati sun mori.

Gyaan buddhi jai sukh ki daata, sankat haro humaari maata.
Ksheersindhu jab Vishnu mathaayo, chaudah ratna sindhu mein paayo.

Chaudah ratna mein tum sukhraasi, seva kiyo Prabhu bani daasi.
Jab jab janm jahan Prabhu leenha, roop badal tahan seva keenha.

Swayam Vishnu jab nar tanu dhaara, leenhyo Avadhpuri avataara.
Tab tum pragat Janakpur maahi, seva kiyo hriday pulkaahi.

Apnaaya tohi antaryaami, vishva vidit tribhuvan ki swaami.
Tum sam prabal shakti nahin aani, kahu lau mahima kahun bakhaani.

Man kram vachan karai sevakaai, man ichchhit vaanchhit phal paai.
Taji chhal kapat aur chaturai, pujahi vividha bhanti manlaai.

Aur haal main kahun bujhaai, jo yah paath karai man laai.
Taako koi kasht noi, man ichchhit paavai phal soi.

Traahi traahi jai dukh nivaarini, trividh taap bhav bandhan haarini.
Jo chaaleesa padhe padhaave, dhyaan lagaakar sunai sunaave.

Taako koi na rog sataave, putra aadi dhan sampatti paavai.
Putraheen aru sampati heena, andh badhir kothi ati deena.

Vipra bolaay kai paath karaavai, shanka dil mein kabhi na laavai.
Paath karaavai din chaaleesa, taa par kripa karen Gaurisa.

Sukh sampatti bahut si paavai, kami nahin kaahu ki aavai.
Barah maas karai jo pooja, tehi sam dhanya aur nahin dooja.

Pratidin paath karai man maahi, un sam koi jag mein kahun naahi.
Bahubidhi kya main karun badaai, ley pareeksha dhyaan lagaayi.

Kari vishwas karai vrat nema, hoye siddh upjai ur prema.
Jai jai jai Lakshmi Bhavaani, sab mein vyapit ho gun khaani.

Tuharo tej prabal jag maahi, tum sam kou dayalu kahun naahi.
Mohi anaath ki sudhi ab lijiye, sankat kaati bhakti mohi dije.

Bhool chook kari kshama humaari, darshan dajai dasha nihaari.
Bin darshan vyakul adhikaari, tumhi achhat dukh sahate bhaari.

Nahin mohi gyaan buddhi hai tan mein, sab jaanat ho apne man mein.
Roop chaturbhuj karke dhaaran, kasht mor ab karahu nivaran.

Kehi prakaar main karun badaai, gyaan buddhi mohi nahin adhikaai.

Doha
Traahi traahi dukh haarini, haro vegi sab traas.
Jayati jayati jai Lakshmi, karo shatru ko naash.

Ramdaas dhar dhyaan nit, vinay karat kar jor.
Maatu Lakshmi daas par, karahu daya ki kor.

Shri Lakshmi Chalisa Meaning in Hindi

॥ दोहा ॥
माँ लक्ष्मी कृपा कर, मेरे हृदय में वास करो।
मेरी इच्छाएँ पूरी करके, मेरी आशा पूरी करो।

यही मेरी अरदास है, हाथ जोड़कर विनती करता हूँ।
आप मेरी हर तरह से सहायता करें, जय हो माँ जगदम्बा।

॥ चौपाई ॥
हे सागर-कन्या (लक्ष्मी), मैं आपका स्मरण करता हूँ, मुझे ज्ञान, बुद्धि और विद्या प्रदान करें।
आप जैसा कोई उपकारी नहीं है, मेरी हर आशा पूरी करें।

जय हो, जगत की माता जगदम्बा, आप ही सबकी सहारा हो।
आप ही सबके हृदय में निवास करती हैं, यही मेरी विनती है।

जगजननी, जय हो सागर-कुमारी, आप दीनों की हितकारी हो।
नित्य विनती करता हूँ हे महारानी, कृपा करें जग जननी भवानी।

किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ, मेरे अपराधों को भूलकर मेरी सुध लें।
कृपा की दृष्टि मुझ पर डालें, जगजननी मेरी विनती सुनें।

हे माता, ज्ञान, बुद्धि और सुख देने वाली, मेरे सभी संकट दूर करें।
जब समुद्र को मथते समय विष्णु भगवान ने चौदह रत्न पाए।

उन रत्नों में आप सुख की खजाना हो, प्रभु की दासी बनकर सेवा की।
जब-जब प्रभु ने जन्म लिया, आप विभिन्न रूपों में सेवा करती आईं।

जब स्वयं विष्णु ने नर रूप धारण किया, और अवधपुरी में अवतार लिया।
तब आप जनकपुर में प्रकट हुईं और हृदय से सेवा की।

अन्तर्यामी ने आपको अपनाया, त्रिभुवन के स्वामी ने आपकी महिमा स्वीकार की।
आपके समान शक्तिशाली कोई नहीं है, मैं आपकी महिमा कैसे बयान करूँ।

जो मन, कर्म और वचन से आपकी सेवा करता है, उसे मनोवांछित फल प्राप्त होता है।
जो छल, कपट और चतुराई त्याग कर, भक्ति से आपकी पूजा करता है।

अब मैं समझाकर कहता हूँ, जो भी यह पाठ मन लगाकर करेगा।
उसे कोई कष्ट नहीं आएगा, और उसकी मनोकामनाएँ पूरी होंगी।

त्राहि त्राहि जय हो दुख निवारिणी, तीनों प्रकार के ताप और बंधनों को हरने वाली।
जो इस चालीसा का पाठ करेगा और ध्यान से सुनेगा।

उसे कोई रोग नहीं सताएगा, पुत्र, धन और समृद्धि प्राप्त होगी।
जो पुत्रहीन और निर्धन है, अंधा, बहरा, कोढ़ी और अत्यंत दुखी है।

वह ब्राह्मण को बुलाकर पाठ कराए, दिल में कभी शंका न लाए।
अगर वह चालीस दिन तक पाठ कराएगा, तो गौरीशंकर की कृपा होगी।

उसे बहुत सा सुख और समृद्धि प्राप्त होगी, किसी चीज की कमी नहीं होगी।
जो बारह महीने पूजा करेगा, उसके समान धनी और कोई नहीं होगा।

जो रोज़ पाठ करेगा, उसकी तरह संसार में कोई नहीं होगा।
विभिन्न प्रकार से आपकी महिमा कहने की क्या आवश्यकता है, जो इसे समझ लेगा।

विश्वास और नियम से व्रत का पालन करेगा, उसे सिद्धि प्राप्त होगी और प्रेम उत्पन्न होगा।
जय हो, जय हो, जय हो माँ लक्ष्मी भवानी, आप गुणों की खान हैं और सबमें व्यापक हैं।

आपकी शक्ति इतनी महान है, कि आपके समान दयालु कोई नहीं है।
अब मेरी, इस अनाथ की सुधि लें, मेरे सभी कष्ट काटकर मुझे भक्ति दें।

मेरी भूल-चूक को क्षमा करें, दर्शन देकर मेरी दशा सुधारें।
आपके बिना दर्शन के मैं व्याकुल हूँ, आप ही मेरी रक्षा कर सकती हैं।

मुझे अपने मन का ज्ञान है कि मुझमें ज्ञान और बुद्धि नहीं है।
आप चतुर्भुज रूप धारण करें और मेरे सभी कष्ट दूर करें।

मैं आपकी महिमा किस प्रकार से करूँ, मेरे पास इसके लिए पर्याप्त ज्ञान नहीं है।

॥ दोहा ॥
त्राहि त्राहि दुख दूर करने वाली माँ, जल्दी से सारे कष्ट दूर करो।
जय हो, जय हो माँ लक्ष्मी, मेरे शत्रुओं का नाश करो।

रामदास प्रतिदिन ध्यान करते हैं, हाथ जोड़कर विनय करते हैं।
माँ लक्ष्मी, अपने इस दास पर दया की कृपा बरसाओ।

Shri Lakshmi Chalisa Meaning in English

Doha
Mother Lakshmi, bless me and reside in my heart.
Fulfill my desires and grant me my hopes.

This is my plea, I bow with folded hands in prayer.
Guide me in every way, victory to you, Mother of the Universe.

** Chaupai **
Oh Daughter of the Ocean (Lakshmi), I meditate upon you, grant me wisdom, intelligence, and knowledge.
There is no one as benevolent as you, fulfill all my hopes.

Victory to the Mother of the Universe, Mother of the World, you are everyone's support.
You reside in everyone's heart, this is my heartfelt plea.

Mother of the Universe, victory to you, Daughter of the Sea, you are the protector of the needy.
I pray to you daily, O Queen, have mercy, Mother Bhavani.

How can I praise you? Please forgive my mistakes and take care of me.
Cast a glance of mercy upon me, Mother of the Universe, hear my plea.

Mother, you are the giver of wisdom, intelligence, and happiness. Remove all my troubles.
When Vishnu churned the ocean, fourteen treasures were obtained.

Among those treasures, you are the embodiment of happiness, serving the Lord as his devotee.
In each of his incarnations, you appeared in different forms to serve him.

When Lord Vishnu took a human form, incarnating in Ayodhya,
You appeared in Janakpur and served him with a joyous heart.

The Omniscient one accepted you, and the Lord of the three worlds recognized your greatness.
No power compares to yours; how can I describe your glory?

Those who serve you with heart, action, and speech receive their heart's desires.
Those who abandon deceit and cunning and worship you with devotion.

Now I explain further, those who read this prayer with true devotion.
Will face no misfortunes and will have their desires fulfilled.

Victory to you, the remover of sorrows, who dispels the threefold sufferings and bondage.
Those who read or listen to this Chalisa attentively will find relief.

No sickness will trouble them, and they will gain wealth, children, and prosperity.
Those who are childless, poor, blind, deaf, or diseased.

Should invite a priest to perform this prayer without harboring any doubts.
If they continue this prayer for forty days, Gauri's blessings will be granted.

They will receive abundant joy and prosperity; nothing will be lacking.
Those who worship for twelve months have no equal in wealth and blessings.

Those who read this daily have no equal in this world.
What more can I say about your greatness? Understanding it is enough.

With faith and devotion, one will find fulfillment and grow in love.
Victory, victory, victory to Mother Lakshmi Bhavani, treasure of virtues, present in all.

Your power is immense in the world; there is no one as compassionate as you.

Remember this poor soul, release me from my troubles and grant me devotion.

Forgive my mistakes, give me your vision, and improve my condition.
Without seeing you, I am restless; only you can protect me.

I am aware of my lack of wisdom and intelligence; you know this in your heart.
Take on your four-armed form and remove my suffering.

How can I praise you? I lack the knowledge to do so fully.

Doha
O Mother, the remover of pain, quickly take away all my suffering.
Victory, victory, victory to you, Mother Lakshmi; destroy my enemies.

Ramdas meditates daily, praying with folded hands.
O Mother Lakshmi, shower your grace upon this humble devotee.